नेहरू बाल पुस्तकालय

बोलती डिबिया

दिविक रमेश

चित्रांकन : **दीपक कुमार दास**

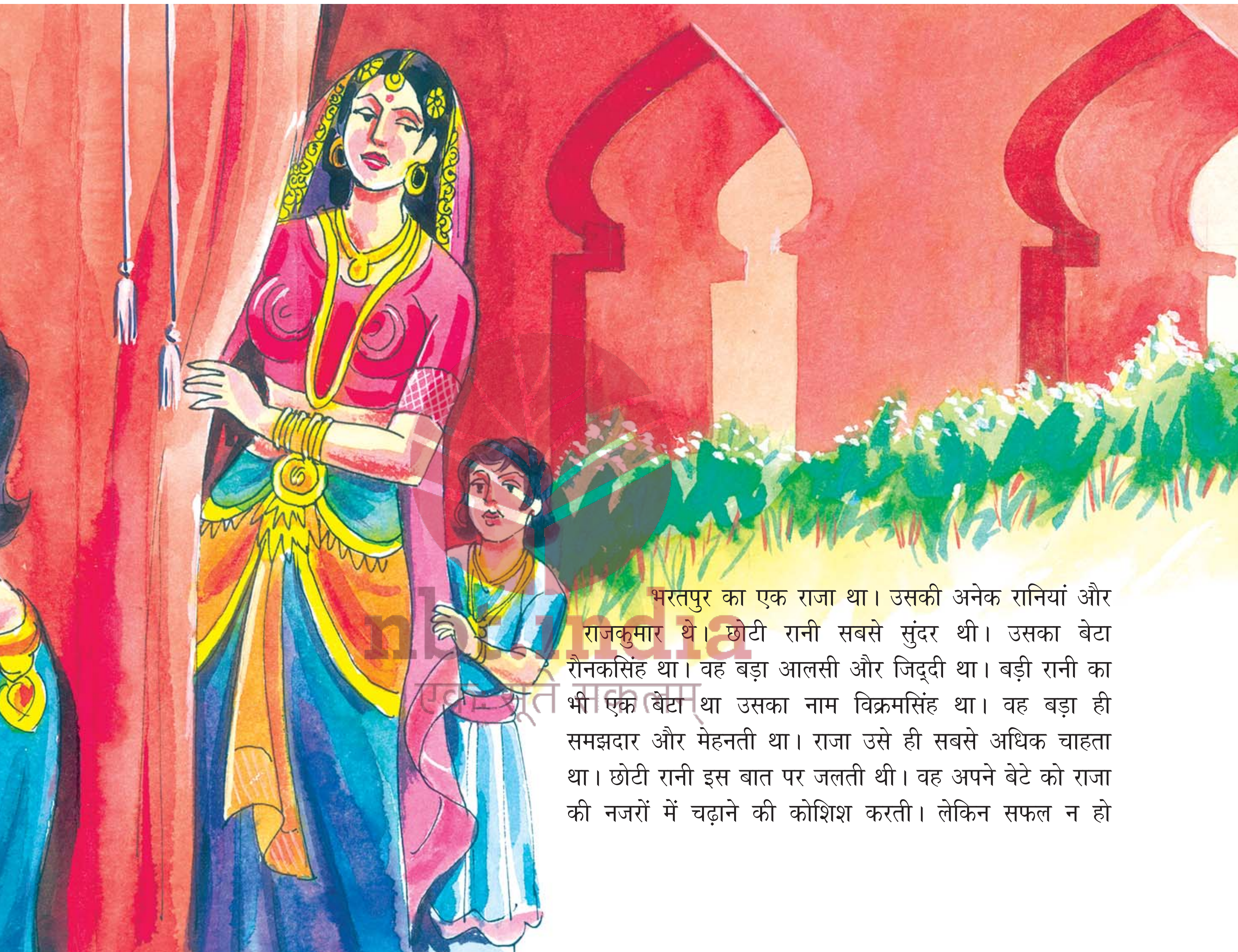


nbt.india
एकः सूते सकलम्

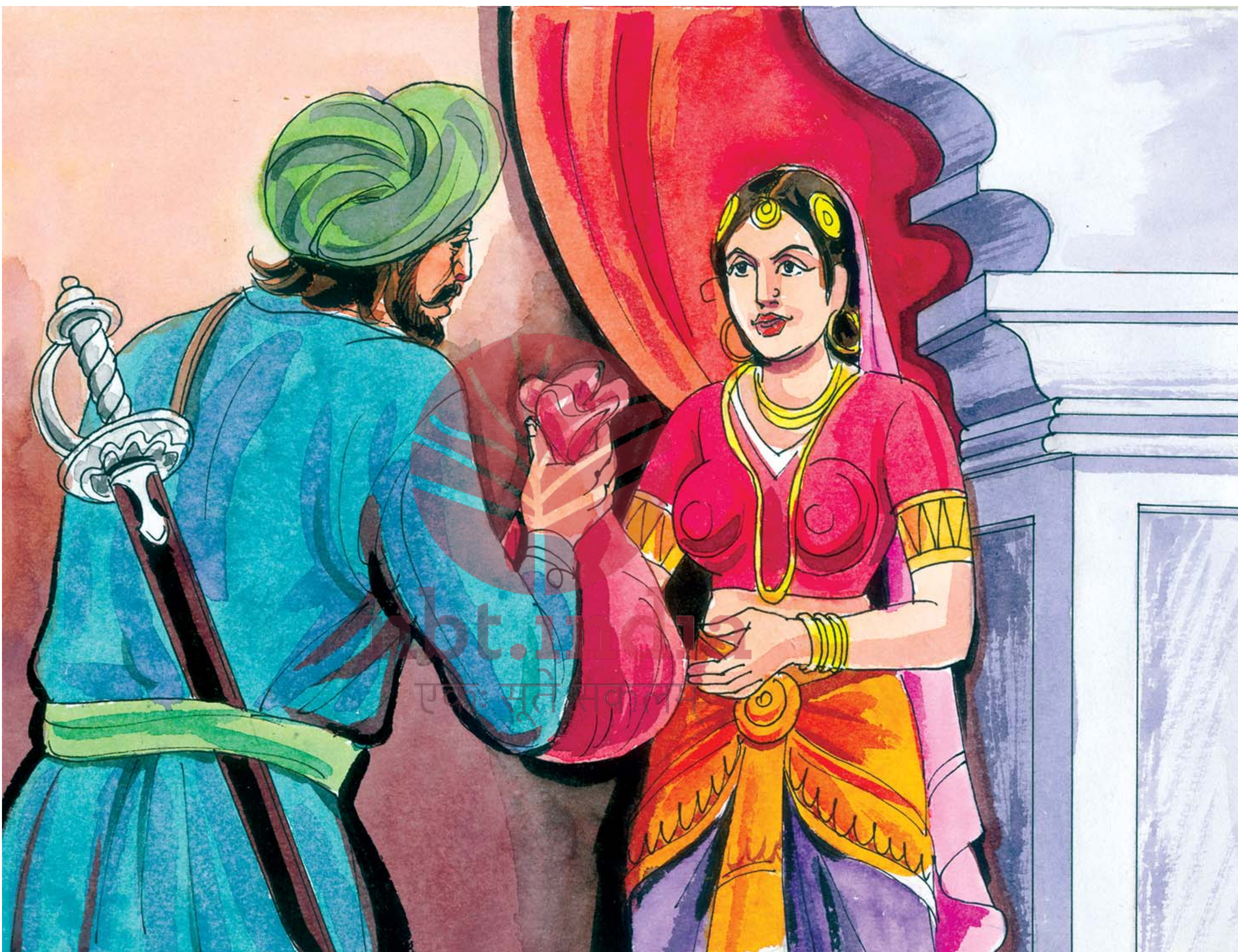
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

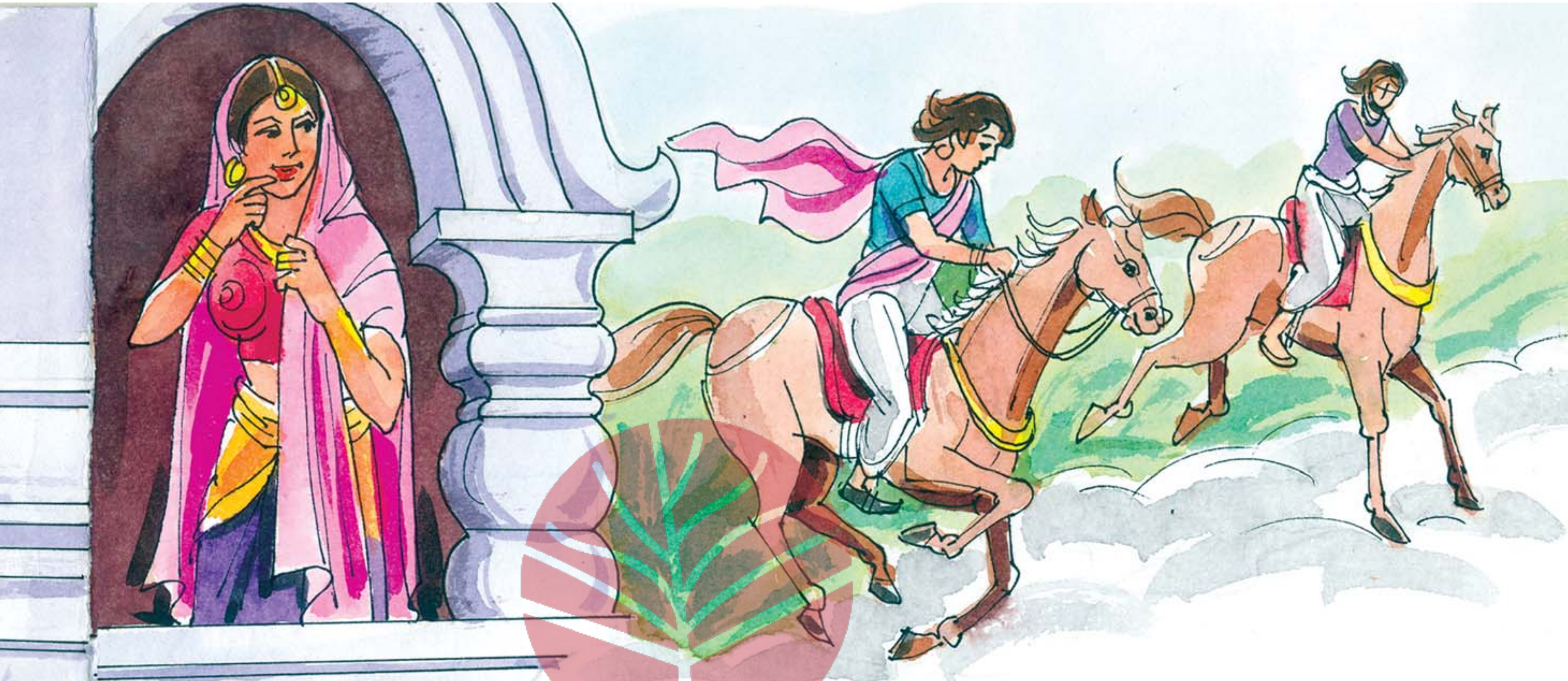
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA





भरतपुर का एक राजा था। उसकी अनेक रानियां और राजकुमार थे। छोटी रानी सबसे सुंदर थी। उसका बेटा रौनकसिंह था। वह बड़ा आलसी और जिद्दी था। बड़ी रानी का भी एक बेटा था उसका नाम विक्रमसिंह था। वह बड़ा ही समझदार और मेहनती था। राजा उसे ही सबसे अधिक चाहता था। छोटी रानी इस बात पर जलती थी। वह अपने बेटे को राजा की नजरों में चढ़ाने की कोशिश करती। लेकिन सफल न हो



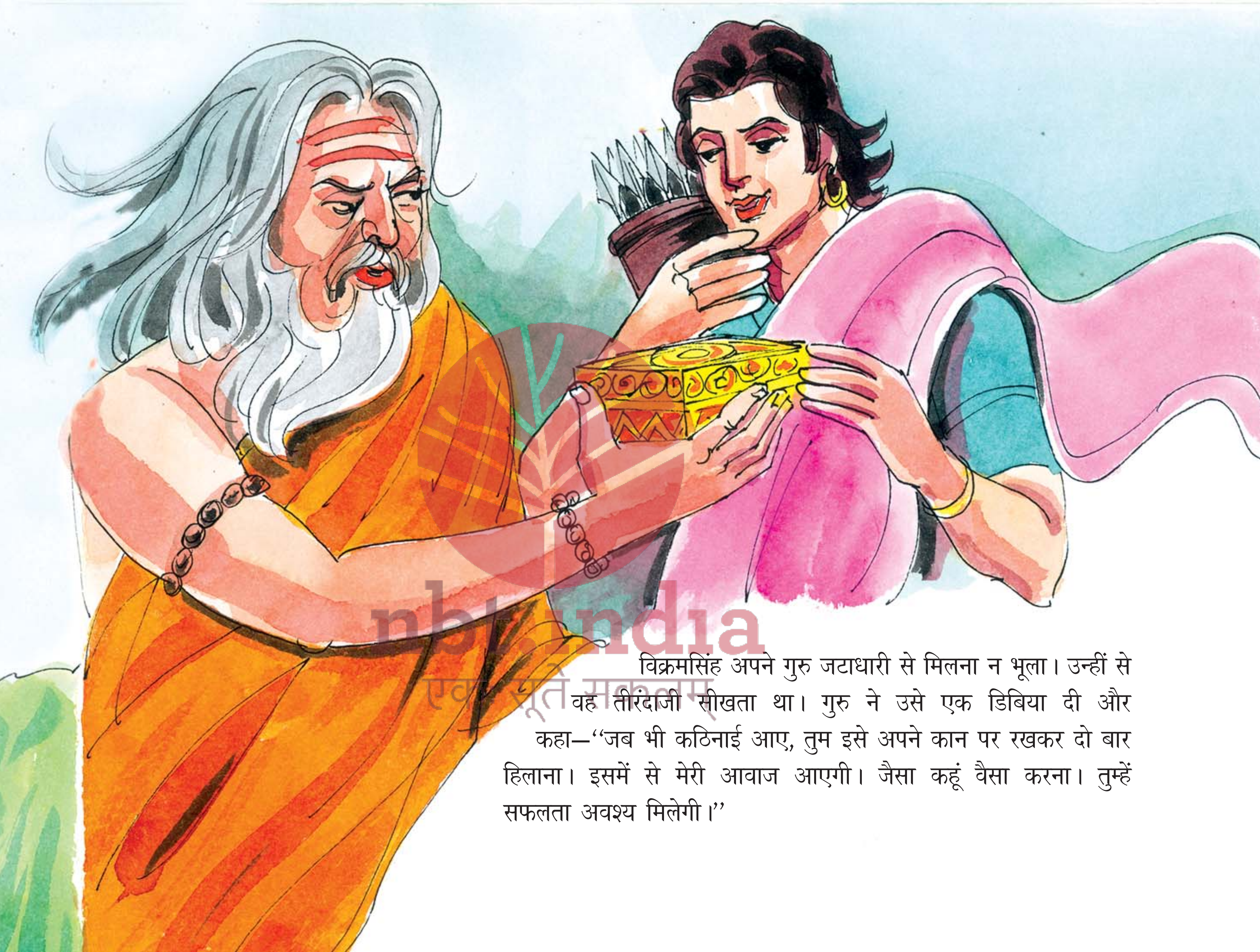


सकी। वह राजा के बाद अपने ही बेटे को राजा बनवाना चाहती थी। लेकिन राजा की नजरों में विक्रमसिंह था।

छोटी रानी ने चाल चली। एक लालची मंत्री को ढेर सारा धन दिया। उसे अपनी तरफ मिला लिया। मंत्री ने राजा को सलाह दी कि अनुभव लेने के लिए सभी राजकुमारों को दूर-दूर भेज दिया जाए। इससे उनकी बुद्धि की भी परीक्षा हो जाएगी।

राजा को बात माननी पड़ी। रौनकसिंह को छोटा होने के कारण रोक लिया गया। विक्रमसिंह और बाकी राजकुमारों को उदास मन से राजा ने विदा किया। सभी अपने-अपने साथियों, घोड़ों और सामान के साथ निकल पड़े।





विक्रमसिंह अपने गुरु जटाधारी से मिलना न भूला। उन्हीं से वह तीरंदाजी सीखता था। गुरु ने उसे एक डिबिया दी और कहा—''जब भी कठिनाई आए, तुम इसे अपने कान पर रखकर दो बार हिलाना। इसमें से मेरी आवाज आएगी। जैसा कहूं वैसा करना। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।''





विक्रमसिंह अपने साथियों के साथ चल दिया। काफी दूर जाने के बाद रास्ते में एक बीहड़ जंगल पड़ा। शाम हो चली थी। जंगल से तरह-तरह की डरावनी आवाजें आ रही थी। विक्रमसिंह और उसके साथी ध्यान से आगे बढ़ते रहे। रास्ता सूझे इसीलिए मशालें जला ली थीं। थोड़ी दूर पर उन्हें बड़ा-सा पेड़ मिला। सभी थककर चूर थे। आराम करने के लिए वहां रुक गए। घोड़े बांधकर सभी सो गए।





विक्रमसिंह को नींद नहीं आ रही थी। उसे कुछ अजीब-अजीब लग रहा था। बहुत दूर से कुछ आवाजें भी आ रही थीं। उसने डिबिया को निकालकर दो बार हिलाया। गुरु की आवाज आई—"विक्रमसिंह, तुम पर बड़ी भारी विपत्ति आने वाली है। थोड़ी ही देर में यहां बुरी आत्माएं आएंगी। वे संख्या में बहुत ज्यादा है। जितनी जल्दी हो, तुम पूर्व दिशा में भाग निकलो। वहां तालाब के पास आश्रम में एक बुढ़िया मिलेगी। वह महान आत्मा है।"





विक्रमसिंह ने सभी को तुरंत जगाया। अपने-अपने घोड़े खोल सभी भाग निकले। आश्रम पहुंचने पर बुढ़िया ने उनका स्वागत किया। खाने को ढेर सारे फल दिए और बोली—"मेरे बच्चों! यहां आराम से सोओ। बुरी आत्माएं कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी।"

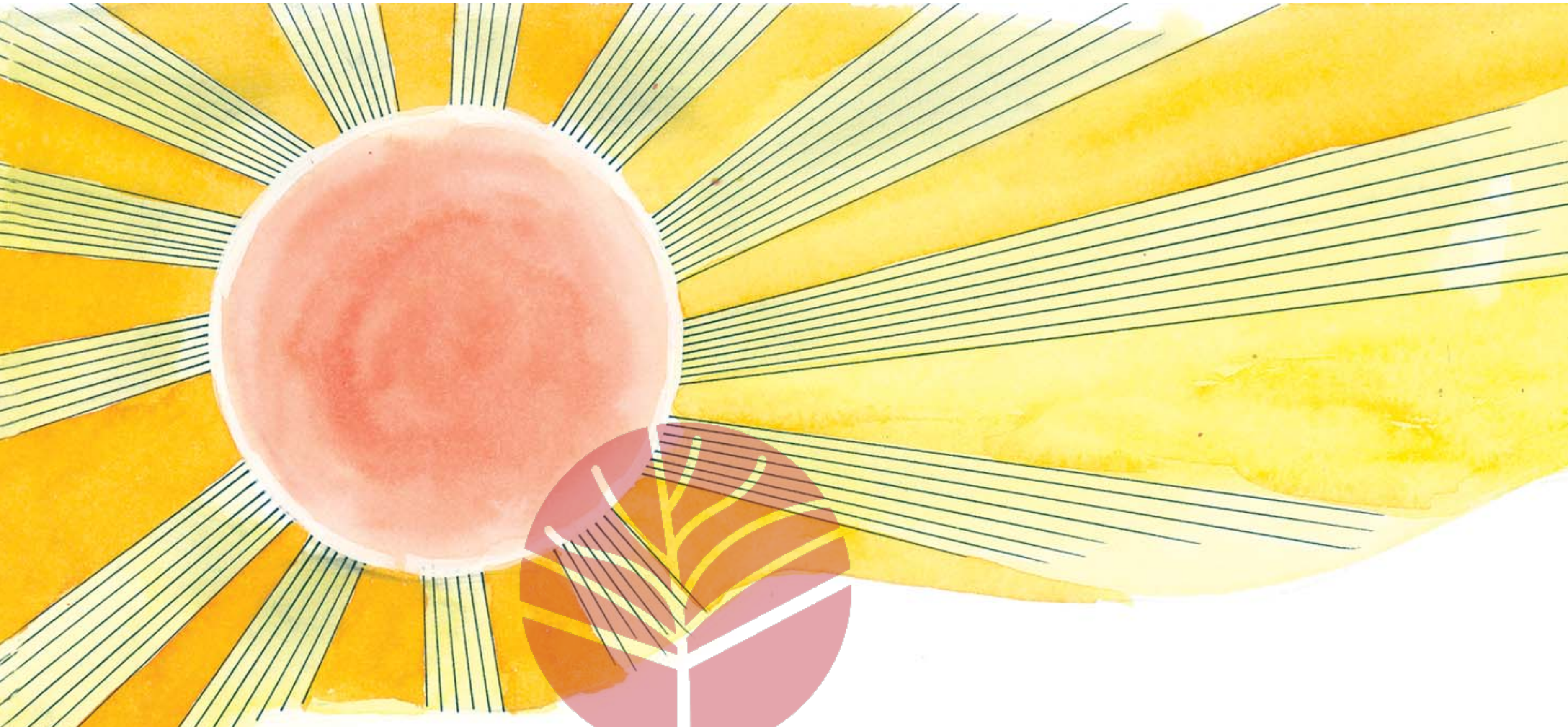
तड़के ही बुढ़िया ने सभी को प्यार से गले लगाकर विदा किया।





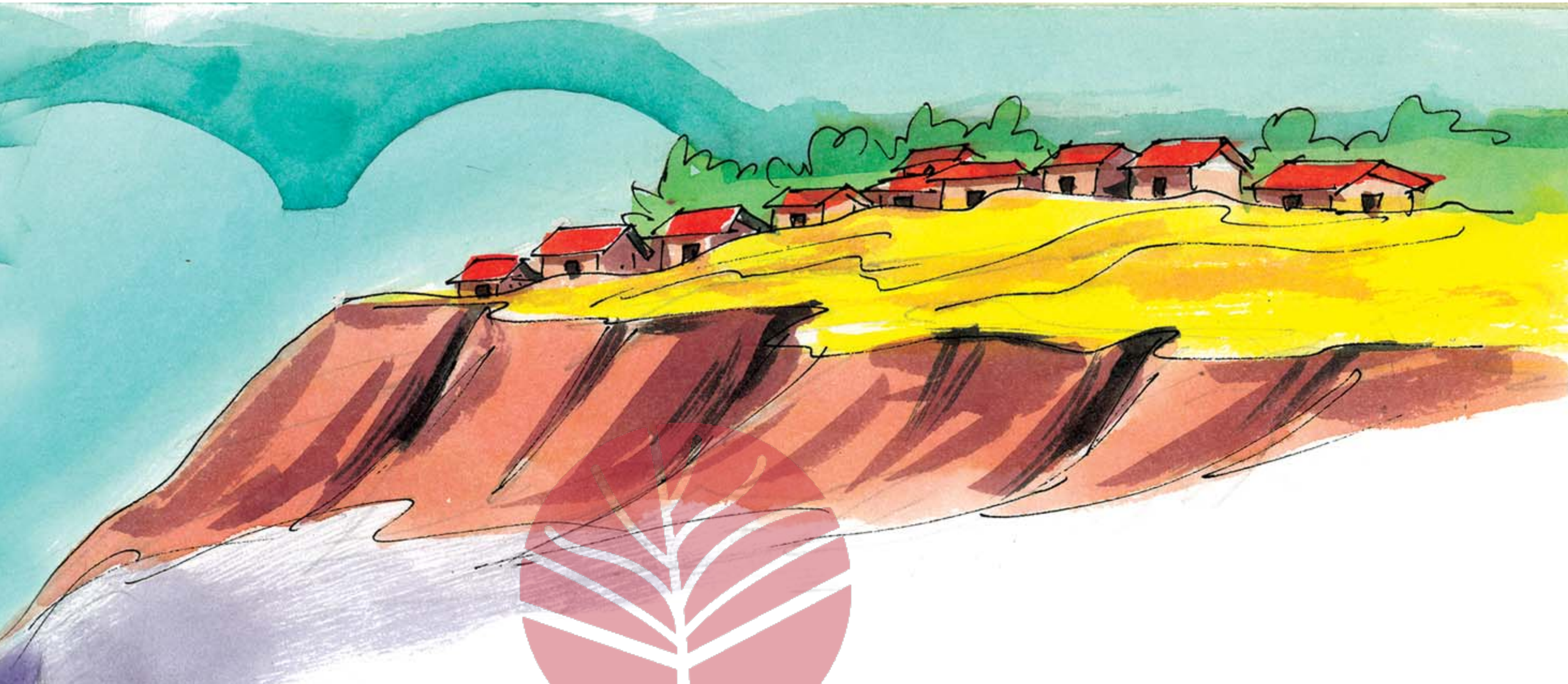
निश्चित स्थान पर पहुंचे तो सभी बहुत निराश हुए। थोड़ी-सी जगह को छोड़कर वहां सब ओर रेत ही रेत था। आसपास काले-काले भयंकर सूखे पहाड़ थे। वहां रहने वाले लोग हड्डियों के ढांचों जैसे थे। कच्चा मकान तक किसी के पास नहीं था। सभी आलसी लगते थे। शरीर पर ढेरों मैल जमा था।





युवराज विक्रमसिंह ने तो ऐसा सोचा भी न था। वह अपने भाग्य को कोसने लगा। तभी उसे डिबिया का ध्यान आया। उसने दो बार हिलाया। आवाज आई-''राजकुमार, इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा। ये लोग जंगली और गरीब हैं। तुम अपनी बुद्धि और मेहनत से इसी जमीन को स्वर्ग बना सकते हो। यहां के लोगों का जीवन सुधार सकते हो। ये जो काले पहाड़ नजर आते हैं, असल में यह सोना है। इन्हें ध्यान से देखो। ये स्लेट की चट्टानें हैं। इन्हें काटकर व्यापार किया जा सकता है। कुएं खोदकर पानी का प्रबंध करो। तुम्हें इन लोगों को सभ्य बनाना है। उठो और अपने साथियों में भी साहस की भावना भरो। समय मत गंवाओ।''





युवराज और उसके साथियों ने उसी दिन से मिलकर काम करना शुरू कर दिया। उनके अच्छे व्यवहार से वहां के लोग भी उनके साथ मिल गए। ढेर सारे कुएं खोद दिए गए। वर्षा का पानी इकट्ठा करने के लिए बहुत बड़ा तालाब खोद लिया गया। गारा-मिट्टी से ईंटें बनाई गईं। पेड़ों की लकड़ियां चीरकर गाड़ियां बनाई गईं। उन पर काले पत्थर ढोकर व्यापार किया जाने लगा। रेतीली जमीन को भी सींच-सींच कर उपजाऊ बना लिया गया। कुछ ही महीनों में वहां के जीवन में बदलाव आने लगा। वहां के लोग युवराज और उसके साथियों को देवता मानने लगे। अब उस स्थान की सुरक्षा के लिए काले पत्थरों से ही एक भव्य किला बनाने की योजना बनीं। किले के लिए बहुत गहरी नींव खोदनी थी।



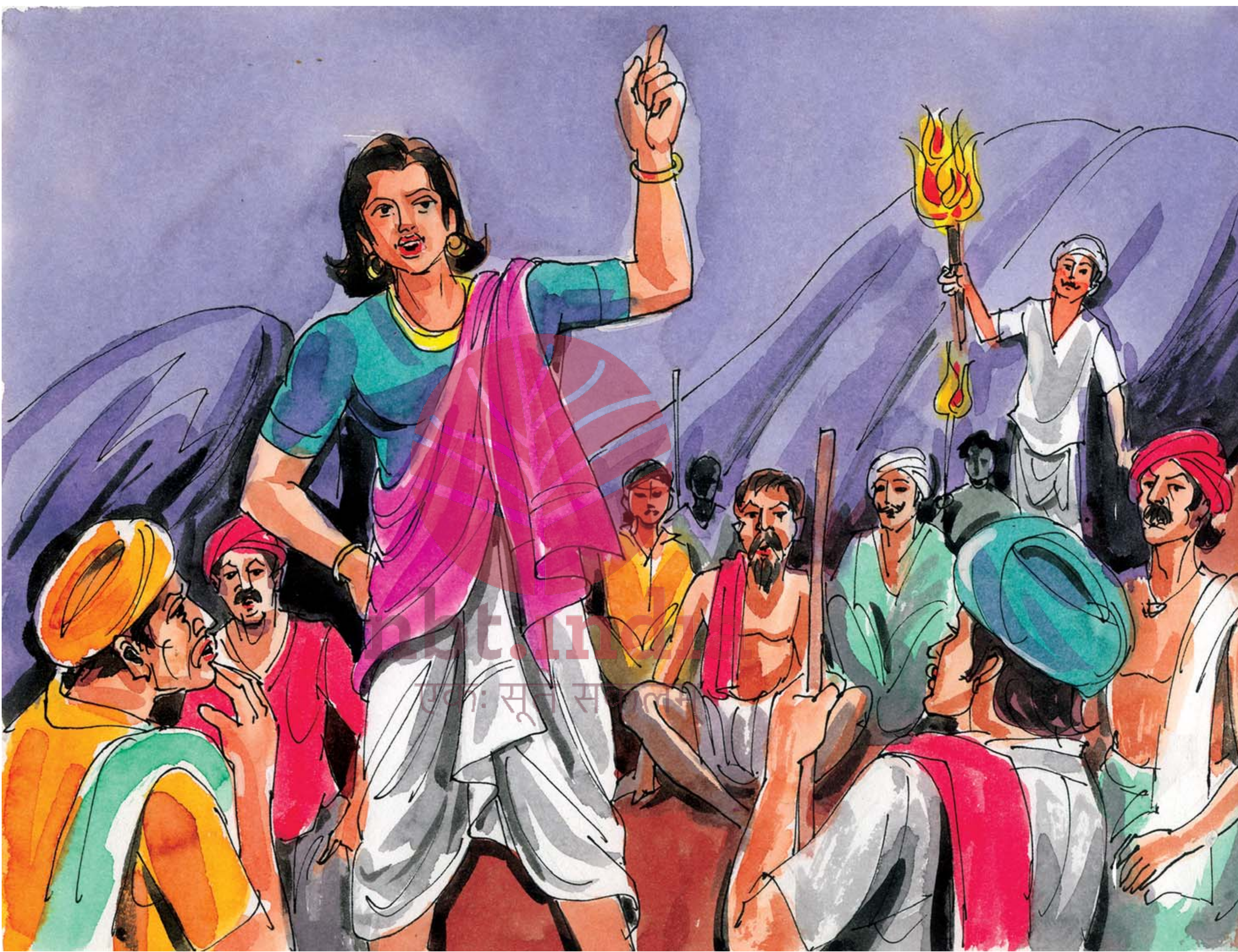


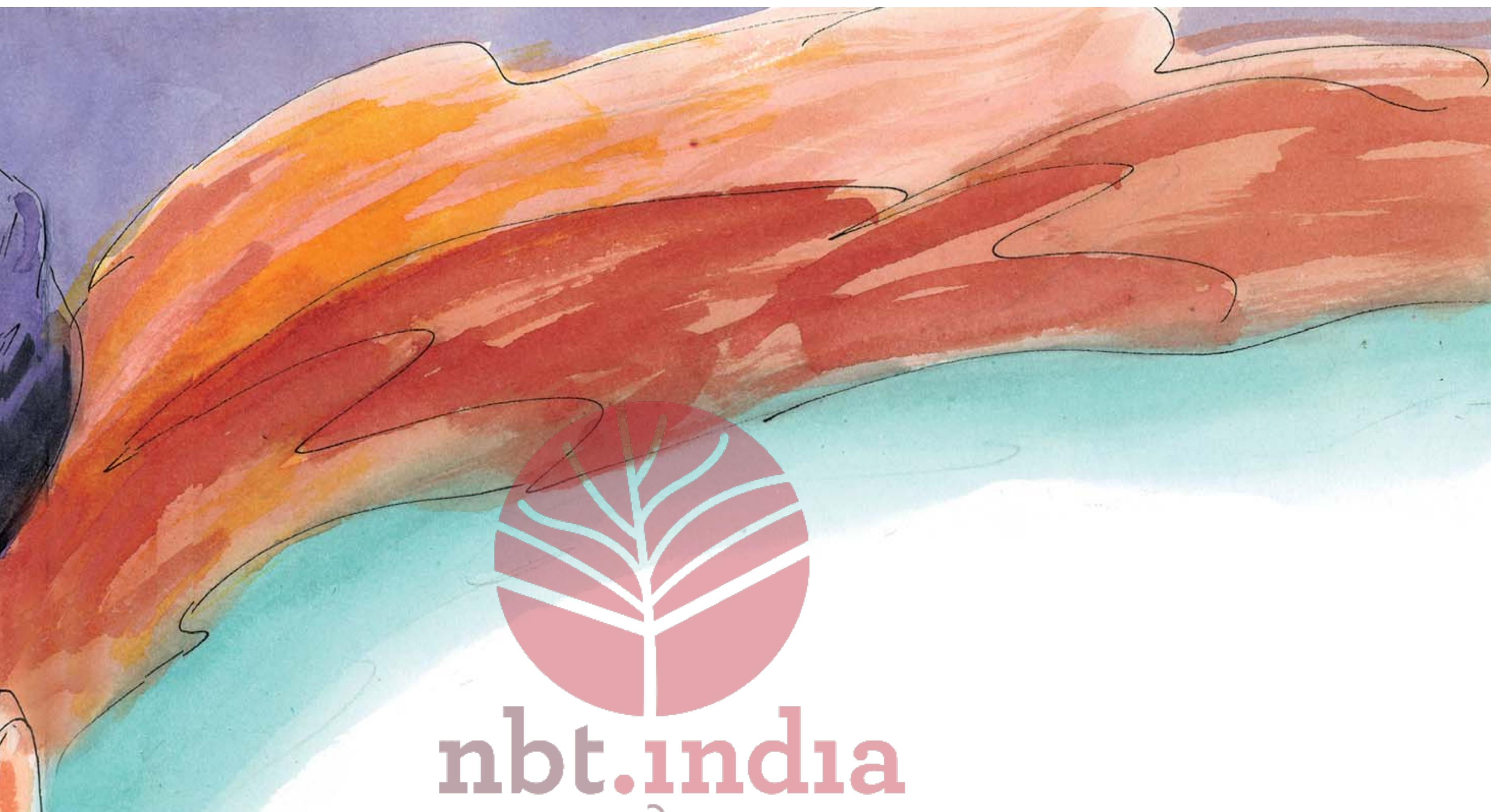
एक स्थान पर जब लोगों ने नींव खोदनी शुरू की तो बहुत तेज और डरावनी आवाज हुई। धरती कांप गई। सभी डर गए। असल में वह आवाज हजार दांतों और सैकड़ों हाथ-पांव वाले दानव और दानवी की थी। वे हजारों सालों से वहां बहुत बड़ी गुफा में सोए पड़े थे। उनकी नींद भंग हो गई थी। उन्होंने अपने बहुत बड़े-बड़े थैलों में लोगों का सुख-चैन चुरा कर बंद किया हुआ था।





डरे हुए लोग भागकर युवराज को बुला लाए। युवराज ने समझा-बुझाकर फिर खुदाई शुरू करा दी। इस पर तो दानव और दानवी को बहुत ही क्रोध आया। दानव ने अपनी बहुत लंबी जीभ लपलपाई और आग का एक बहुत बड़ा गोला उगल दिया, जो आकाश में लीन हो गया। सभी फिर डर गए। युवराज ने साहस दिलाने की कोशिश की। लेकिन कोई नहीं माना। सब भाग गए।





युवराज ने अगले दिन से अपने साथियों के साथ स्वयं खुदाई करने का निश्चय किया और घोषणा की।

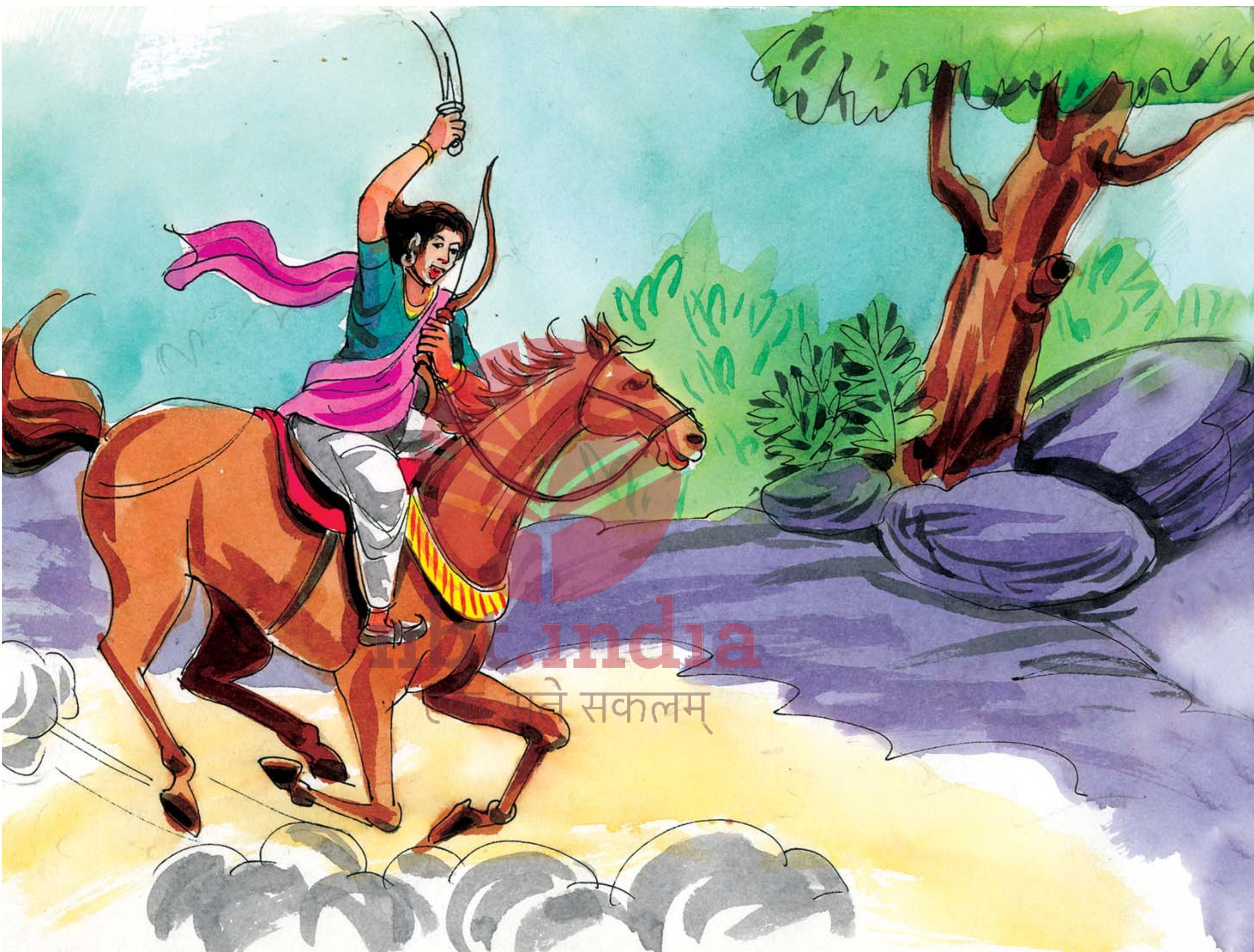
दानव ने दानवी से कहा—''अब हमारी दाल नहीं गलेगी। युवराज बुद्धिमान, निडर और मेहनती है। अब हमें कोई और ठिकाना ढूंढ़ना चाहिए। रात में ही भाग चलते हैं।''





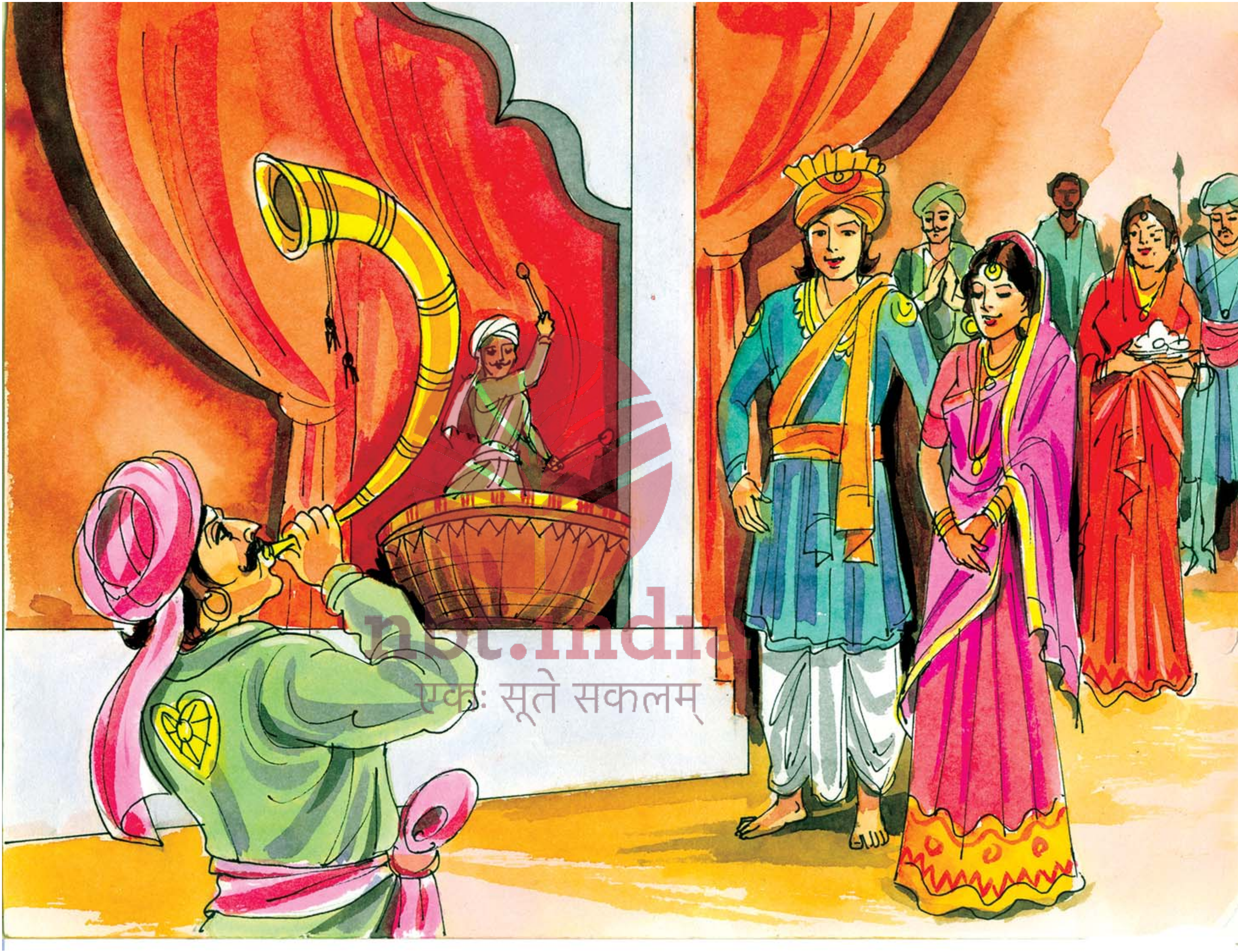
लेकिन दानवी लोगों को बिना सजा दिए नहीं भागना चाहती थी। इसीलिए दोनों ने मिलकर, रात ही में अपने थैलों से सुख-चैन निकालकर कुओं और तालाब आदि का सारा पानी भर लिया और बड़ी-बड़ी पीठों पर लादकर चले गए। दानवी ने अपनी भयंकर फूंक से बादलों को भी उड़ा दिया। सुबह लोग उठे तो एक भी बूंद पानी नहीं था। हाहाकार मच गया। सभी युवराज के पास आए। उसे ही इस मुसीबत के लिए दोषी माना गया। सभी उसे कोसने लगे।

युवराज पहले ही बहुत परेशान था। तभी उसे डिबिया का ध्यान आया। उसने डिबिया को हिलाया। उसमें से आवाज आई—''युवराज, यह करतूत भयंकर दानव और दानवी की है। वे अपने थैलों में सारा पानी चुराकर जंगल की ओर भाग गए हैं। जाओ और होशियारी से उनके थैलों में छेद कर दो।''



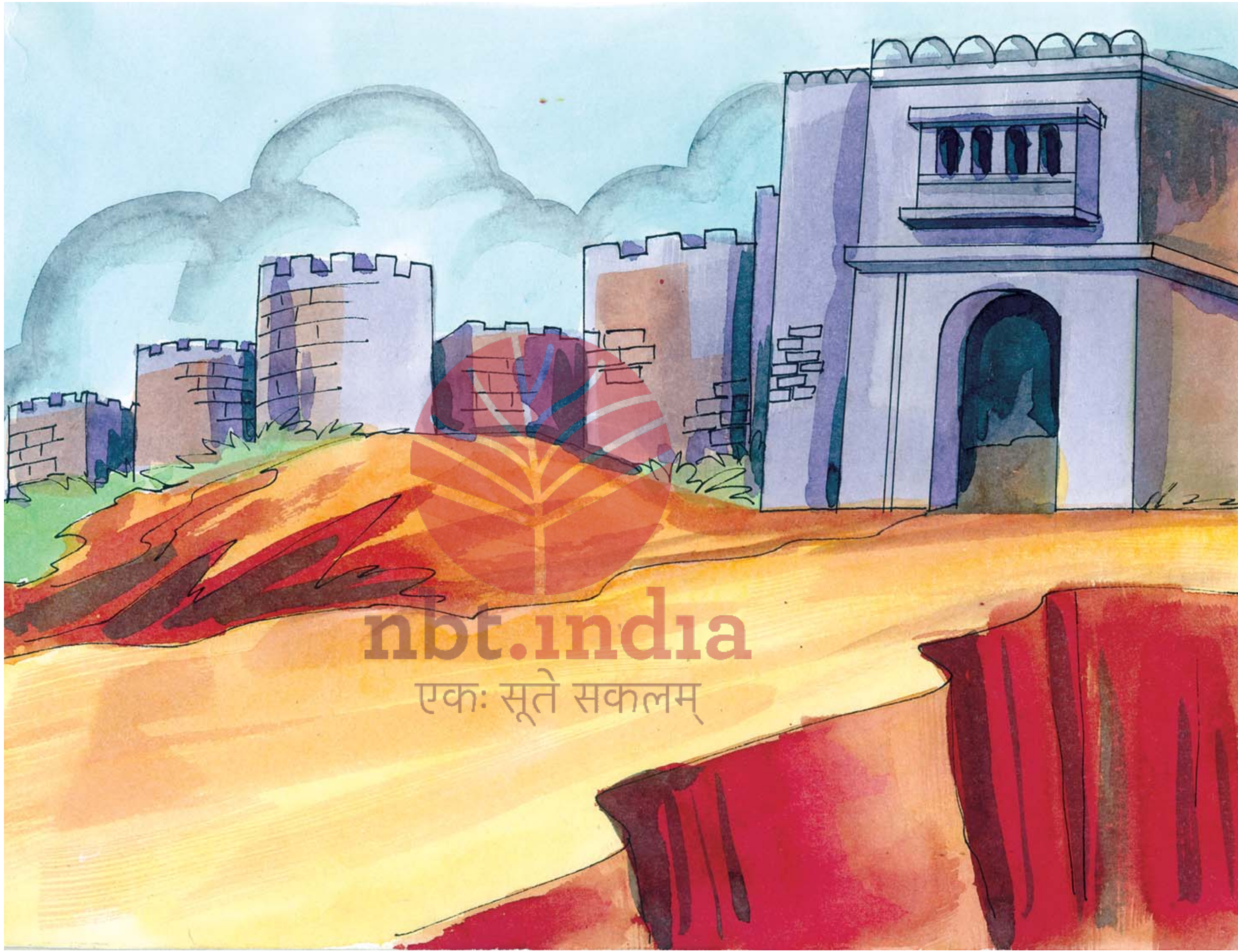


युवराज तुरंत ही धनुष लेकर घोड़े पर दौड़ गया। कुछ ही देर बाद उसे दानव-दानवी जाते हुए नजर आए। उसने पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर निशाने साधे। उनकी पीठ पर लदे थैलों में छेद कर दिए। पानी बहुत तेजी से बह निकला। वहां जमीन में एक बहुत बड़ी झील खुद गई। दानव-दानवी उसी में डूब गए। बाकी लोग भी तब तक वहां आ पहुंचे। सभी ने युवराज से माफी मांगी और उसकी सराहना की।





कुछ ही दिनों में नहरें खोद-खोदकर झील से पानी को नगर तक पहुंचाया गया। उड़े हुए बादल भी कुछ महीनों बाद लौट आए। फिर से जिंदगी खुशहाली की ओर बढ़ चली। युवराज को वहां का राजा बनाया गया। वहीं की एक सुंदर कन्या से विवाह हो गया। सप्ताह भर लोग खूब मेहनत करते। छुट्टी के दिन, परिवार सहित, झील के किनारे सैर-सपाटे और आराम के लिए आते। दानव और दानवी को फिर कभी किसी ने नहीं देखा।



गोपसंस पेपर्स लिमिटेड, नोयडा द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-237-5860-2
पहला संस्करण : 2010
पांचवीं आवृत्ति : 2019 (शक *1940*)

Bolti Dibiya *(Hindi Original)*
₹ 50.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in